भारतीय कला

एवं

संस्कृति के प्रतीक

डॉ. सुरेन्द्र वर्मा

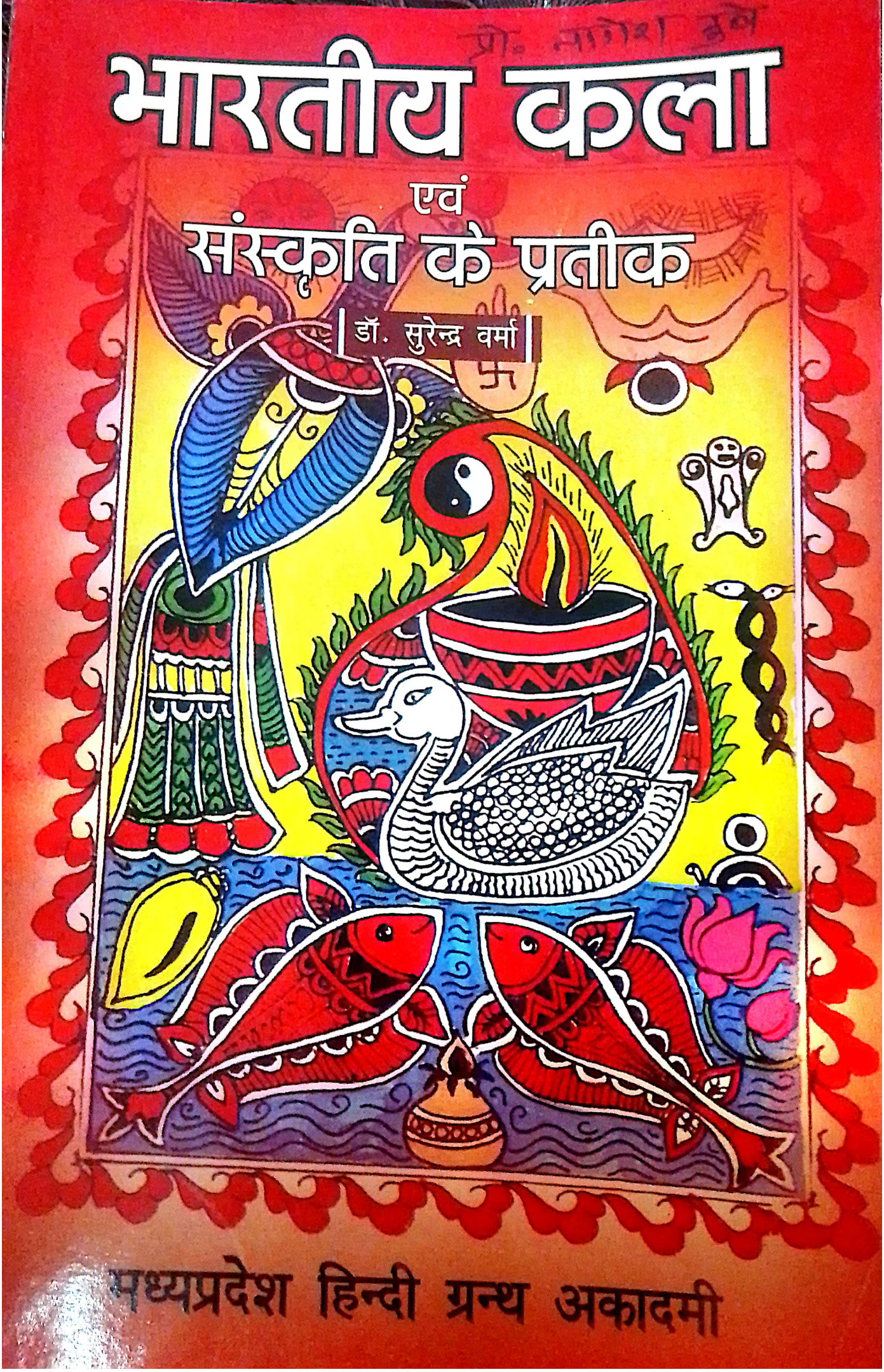

मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

Scanned with OKEN Scanner

भारतीय कला एवं संस्कृति के प्रतीक :

डॉ. सुरेन्द्र वर्मा

© मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

■ प्रादेशिक भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तरीय ग्रन्थों के निर्माण की, भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) की केन्द्र प्रवर्तित योजनान्तर्गत, मध्यप्रदेश शासन की ओर से प्राप्त अनुदान की मदद से रियायती मूल्य पर मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल द्वारा प्रकाशित।

प्रकाशक मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,
रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बानगंगा,
भोपाल (म.प्र.) 462 003
दूरभाष (0755) 2553084
फैक्स (0755) 2762123

संस्करण : द्वितीय (आवृति) 2011

मूल्य : रु. 50.00 (पचास) मात्र

कंपोजिंग : बालाजी ग्राफिक्स, भोपाल

आवरण चित्र : श्रीमति पीयूषा श्रीवास्तव

चित्रांकन : डॉ. रवीन्द्र पगारे

मुद्रक : प्रकाश प्रिंटर्स, भोपाल, मो. 09425008274

Scanned with OKEN Scanner

प्राक्कथन

मातृभाषा के प्रति सम्मान एवं अनुराग समाज की सांस्कृतिक उन्नयन का प्रतीक है। मातृभाषा जहाँ एक ओर अभिव्यक्ति एवं गृहतम विषयों/विचारों को समझने-समझाने का सहज माध्यम है, वहीं दूसरी ओर इससे सृजनशीलता की अपार सम्भावनाएँ निहित होती हैं। शिक्षाविदों की भी यही मान्यता रही है कि अध्ययन, अध्यापन और प्रशासन का सबसे सशक्त माध्यम मातृभाषा ही है। इसलिए पाँच दशक पूर्व भारतीय संसद ने यह संकल्प पारित किया कि देश में उच्च स्तर तक की शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से सुलभ कराई जाए। इस उद्देश्य से विभिन्न राज्यों में हिन्दी ग्रन्थ अकादमियों एवं विश्वविद्यालय ग्रन्थ पुस्तक बोर्डों की स्थापना 1970 में की गई।

हिन्दी देश की राजभाषा है। देश में सर्वाधिक लोग हिन्दीभाषी हैं। पिछले चार-पाँच दशकों में इस भाषा में विश्व स्तर का साहित्य रचा गया है, यही संख्या में विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम से संबंधित विभिन्न विषयों की अनेक पुस्तकें लिखी गई हैं, फिर भी मेरा मानना है कि इस दिशा में अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। आप सहमत होंगे कि अपनी भाषा और संस्कृति को लेकर हिन्दी के प्रति अनुराग भाव अपेक्षाकृत कम हो रहा है। अतः प्रदेश में उच्च शिक्षा से जुड़े प्रबुद्धजनों का यह विशेष दायित्व बनता है कि वे इस स्थिति में बदलाव के संवाहक बनें। इस हेतु हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पुस्तकों के निर्माण एवं प्रकाशन का जो कार्य कर रही है, उसमें हर संभव सहयोग दें तथा अकादमी की पुस्तकों को बढ़ावा दें। यह इसलिए भी कि अब स्नातकोत्तर स्तर पर भी हिन्दी माध्यम वाले विद्यार्थियों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है, जिनकी पाठ्य-सामग्री से जुड़ी आवश्यकता की पूर्ति अकादमी को करना है। आप सभी प्राध्यापकों के सक्रिय लेखकीय सहयोग से ही अकादमी यह लक्ष्य प्राप्त कर सकती है।

आज विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विस्मयकारी गति से विकास हो रहा है, उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नवीन विषय जुड़ रहे है और अंतरानुशासन वाले विषयों का समावेश हो रहा है। ऐसे स्थिति में और भी आवश्यक हो जाता है कि इन परिवर्तनों को दृष्टिगत रखते हुए ग्रन्थों के लेखन और प्रकाशन के कार्य को और अधिक तेजी से आगे बढ़ाया जाए।

उच्च शिक्षा विभाग के अन्तर्गत कार्यरत मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी को उपलब्धियों को समूचे देश में स्वीकारा गया है। इस स्थिति को बनाए रखने के लिए मैं चाहता हूँ कि प्रदेश के सभी अध्यापक अकादमी की पुस्तकों को अपना संबल एवं सहयोग दें। साथ ही मेरी यह अपेक्षा भी है कि आप अपना रचनात्मक परामर्श भी दें। मेरा मानना है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी के चहुँमुखी विकास के पुनीत कार्य में आपकी ओर से यह सार्थक अवदान होगा।

(लक्ष्मीकांत शर्मा)

मंत्री, उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं प्रशिक्षण, संस्कृति
जनसम्पर्क, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मध्यप्रदेश
एवं अध्यक्ष, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

Scanned with OKEN Scanner

भूमिका

लोक कलाओं में मेरी अभिरुचि मेरी हैरानी पकड़कर मुझे प्रतीकों की ओर ले गई। मैंने ध्यान दिया कि कौड़ी, शंख, स्वस्तिक, कलश, दीपक, हंस, मयूर, वृक्ष, … चक्र, छत्र, गदा, त्रिशूल, मछली, सर्प, कुम्भ, … इत्यादि कुछ ऐसे अभिप्राय हैं जिनकी पुनरावृत्ति लोक चित्रकलाओं में बार-बार होती रही है। अतः यह उत्सुकता होना कि इन अभिप्रायों (मोटिफ) के पीछे निहित अर्थ और उनके स्रोत क्या हैं, स्वाभाविक था। इस संबंध में पहले तो मैंने कुछ आलेख तैयार किए जो प्रायः … (नई दिल्ली, दैनिक) में प्रकाशित हुए। इसी बीच मुझे डॉ. ए.एल. श्रीवास्तव की पुस्तक, "भारतीय कला प्रतीक" हाथ लग गई। इससे मुझे काफी जानकारी प्राप्त हुई। यदि यह पुस्तक मुझे न मिल पाती तो शायद ही इसी के समानान्तर लेख यह कार्य संपन्न हो पाता। अतः … मैं डॉ. श्रीवास्तव और उनके ग्रन्थ के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

अपनी इस छोटी सी पुस्तिका, **भारतीय कला एवं संस्कृति के प्रतीक** के लिए मैंने अनेक स्रोतों से जानकारी जुटाई है। इनमें अनेकानेक दैनिक पत्र और सामयिक पत्र-पत्रिकाएँ भी सम्मिलित हैं, जिनमें प्रतीकों से संबंधित लेखादि प्रकाशित होते रहे हैं। उन सभी आलेखों का उल्लेख कर पाना मेरे लिए संभव नहीं है, क्योंकि समय समय पर पढ़े गए इन सभी आलेखों के शीर्षक और लेखकों के नाम इत्यादि नोट करना कभी ध्यान में ही नहीं आया। केवल प्रासंगिक विषय-वस्तु को ही नोट करके संतुष्ट हो गया। अतः इसका मुझे बहुत दुःख है कि ऐसे आलेखों के लेखकों का नाम उल्लेख कर मैं उन्हें धन्यवाद के दो शब्द नहीं कह पा रहा हूँ, किन्तु उन सभी के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

मैंने इस पुस्तिका को एक संदर्भ पुस्तिका के रूप में रखा है। इसलिए प्रतीकों का वर्णन अकारादि क्रम से किया गया है। वस्तुतः मैं इसको 'प्रतीकावली' नाम देना चाहता था, किन्तु कुछ मित्रों के सुझाव पर स्पष्टता की दृष्टि से इसे "भारतीय कला एवं संस्कृति के प्रतीक" नाम से प्रकाशित किया गया है।

मैं अपने मित्र डॉ. रवींद्र पगारे को, जो पुरातत्त्व एवं चिकित्सक और साथ ही एक जाने-माने चित्रकार भी हैं, केवल धन्यवाद देकर उनकी कृपा से उऋण नहीं हो जाना चाहता। उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक कुछ 'प्रतीकों' के चित्र इस पुस्तिका के लिए बनाए हैं। उन्हें आभार व्यक्त करने के लिए मेरे पास उपयुक्त शब्द नहीं हैं।

अंत में मैं मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल के वर्तमान निदेशक, डॉ. गोविंद प्रसाद शर्मा का तहेदिल से शुक्रगुज़ार हूँ कि वे इस पुस्तिका को न केवल अकादमी से प्रकाशित करने के लिए तैयार हुए बल्कि इसे रुचि लेकर कम से कम समय में प्रकाश में भी लाए।

सुरेन्द्र वर्मा

10 एच.आई.जी.

1-सर्कुलर रोड, इलाहाबाद (उ.प्र.) 211001

फोन : 5432-2624438

जनवरी 1, 2009

Scanned with OKEN Scanner